शिक्षक - रवि शंकर राम, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 09-11-2020, पत्र - MA-II

मुद्रा परिमाण के क्लासीकल सिद्धान्त की तुलना में केन्जीय सिद्धान्त की श्रेष्ठता।
[Superiority of the keynesian theory over the classical quantity theory of money]

मुद्रा के परिमाण के क्लासीकल सिद्धान्त की तुलना में केंज का मुद्रा कीमत सिद्धान्त अधिक श्रेष्ठ है जिसके निम्नलिखित कारण है -

(1) केन्ज का सिद्धान्त इस लिए श्रेष्ठ कि वह इस क्लासीकल मत का खण्डन करता है कि मुद्रा के परिमाण तथा कीमतों के बीच प्रत्यक्ष एवं समानुपातिक सम्बन्ध स्थापित करता है। इसकी बजाय वह मुद्रा के परिमाण तथा कीमतों के बीच प्रत्यक्ष एवं समानुपातिक सम्बन्ध स्थापित करता है। इसकी बजाय वह मुद्रा के परिमाण तथा कीमतों के बीच अप्रत्यक्ष तथा अननुपातिक सम्बन्ध स्थापित करता है।

(2) केन्ज के सिद्धान्त की श्रेष्ठता इस बात में भी है कि उसने मुद्रा के सिद्धान्त को मूल्य सिद्धान्त से एकीकृत कर दिया है। मूल्य सिद्धान्त यह बताता है कि किसी भी वस्तु का मूल्य मांग व पूर्ति की शक्ति द्वारा निर्धारित होता है। सामान्य कीमत स्तर

उत्पादन लागत के स्तर, पूर्ति की लोच तथा रोजगार के स्तर पर निर्भर करता है। अतः केन्ज ने अपने उत्पादन रोजगार सिध्दान्त के द्वारा सफलतापूर्वक सामान्य मूल्य सिध्दान्त व मुद्रा सिध्दान्त का एकीकरण कर दिया है। वह बताता है कि मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन एक प्रतिक्रिया के क्रम को उत्पन्न कर देती है जो ब्याज दर, प्रभावी मांग की मात्रा, उत्पादन और रोजगार के स्तर व उत्पादन लागतों के जरिए सामान्य स्तर को प्रभावित करता है।

③ क्लासीकल विश्लेषण के मुकाबले केन्जीयन विश्लेषण इस मायने में भी श्रेष्ठ है कि यह बेरोजगारी तथा पूर्ण रोजगार दोनों स्थितियों में मुद्रा के परिमाण और कीमतों के सम्बन्ध का अध्ययन करता है।

④ क्लासीकल सिध्दान्त की अपेक्षा केन्जीयन सिध्दान्त इस लिए भी श्रेष्ठ है कि यह महत्वपूर्ण नीति संकेतों पर बल देता है। क्लासीकल सिध्दान्त मानता है कि मुद्रा के परिमाण में होने वाली प्रत्येक वृध्दि से स्फीति आती है। दूसरी ओर, केन्ज कहता है कि जब तक बेरोजगारी रहती है तब तक कीमतों में बहुत थोड़ी-थोड़ी वृध्दि होती है और स्फीति का कोई खतरा नहीं होता है। मुद्रा के परिमाण में होने वाली वृध्दि केवल तभी स्फीतिकारी होती है जब

अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार स्तर पर पहुँच जाती है।

पैटिनकिन द्वारा किया गया मुद्रा तथा मूल्य सिद्धान्त का एकीकरण : वास्तविक शेष प्रभाव (Patinkin's integration of monetary and value theory: The Real Balance Effect)

पैटिनकिन ने नव क्लासीकल अर्थशास्त्रियों की इस बात को लेकर आलोचना की है कि उन्होंने वस्तु बाजार एवं मुद्रा बाजार का द्वि-विभाजन कर दिया है। द्वि-विभाजन (dichotomisation) का अर्थ है कि सापेक्ष कीमत स्तर (Relative price) को वस्तुओं की मांग तथा पूर्ति निर्धारित करती है और निरपेक्ष कीमत स्तर को मुद्रा की मांग तथा पूर्ति निर्धारित करती है। नव-क्लासीकल सिद्धान्त की द्वि-विभाजन की मान्यता का खण्डन करते हुए पैटिनकिन ने अर्थव्यवस्था के मुद्रा बाजार तथा वस्तु बाजार को एकीकृत किया है। उसने वास्तविक शेष प्रभाव (Real balance effect) के माध्यम से दोनों बाजारों का समाधान किया है। वास्तविक शेषों का अर्थ

हैं - लोगों के नकदी धारणों के स्टॉक की वास्तविक क्रय शक्ति।

जब कीमत स्तर बदलता है तो वह लोगों के नकदी धारणों की क्रय शक्ति को प्रभावित करता है जो कि आगे वस्तुओं की मांग और पूर्ति को प्रभावित करती है। यही वास्तविक शेष प्रभाव है। पेटिनकिन इस प्रभाव के माध्यम से द्वि-विभाजन को नकारता है। इसके लिए, पेटिनकिन किसी समुदाय द्वारा धारित वास्तविक शेषों के स्टॉक (M/P) को उसकी वस्तुओं के लिए मांग पर प्रभाव के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार किसी वस्तु के लिए मांग, वास्तविक शेष तथा सापेक्ष कीमतों पर निर्भर करता है। अब यदि कीमत स्तर बढ़ेगा तो इससे लोगों का वास्तविक शेष (क्रय शक्ति) कम हो जायेगा और वे पहले से कम खर्च करेंगे। इसका मतलब है कि वस्तुओं की मांग कम हो जायेगी और परिणामतः कीमत स्तर गिर जायेगा। इसके विपरीत कीमत स्तर गिरने से वास्तविक शेष ~~गिर जायेगा~~ बढ़ जायेगा।

पेटिनकिन के शब्दों में "

यही महत्वपूर्ण बात है निरपेक्ष कीमत स्तर का

अपने सन्तुलन मूल्य की ओर प्रवैगिक समूहन वास्तविक क्षेत्र प्रभाव के माध्यम से - वस्तु बाजारों को और निष्कर्षतः सापेक्ष कीमतों को प्रभावित करेगा।" इस प्रकार निरपेक्ष कीमतें न केवल मुद्रा के बाजार में बल्कि अर्थव्यवस्था के वास्तविक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं।